بسم الله الرحمن الرحيم

وَصَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ الْعَصْرِ (ع) أَدْرِكْنَا

बराअते फ़ातेमी (अ.स)
अज़ ख़िलाफ़ते ग़ासेबी

Az Zahra الزهراء
PUBLICATION

Regd. Off.:
AZZAHRA
Imambada Baqerya
20/24, Raudat Tahera Street,
Mumbai - 400 003. INDIA

Email us : info@azzahra.in Website : www.azzahra.in

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم وَصَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ الْعَصْرِ (عج) أَدْرِكْنَا

बराअते फ़ातेमी (अ.स) अज़ ख़िलाफ़ते ग़ासेबी

आलमे इस्लाम में जितने भी फ़िरक़े हैं उनमें मकतबे तशीअ को बहुत से इम्तेयाज़ात हासिल हैं इन में एक ये है कि वो रसूले अकरम (स.अ.व.अ) की वसीयत 'हदीसे सक़लैन' पर अमल करते हैं। तशीअ को ये एज़ाज़ रहा है कि ये फ़िरक़ा हज़रत अली (अ.स) और उनकी पाक ज़ुर्रियत का पैरोकार है और यही उसकी शनाख़्त भी है। इब्तेदा ही से इस फ़िरक़े की बुनियाद इत्तेबए अहलेबैते पैग़म्बर (स.अ.व.अ) रही है। अक़ाएद हों या उसूले दीन, अहकामे शरई हों या तफ़्सीरे क़ुरआन या तालीमते अख़लाक़ व आदाब हर मैदान में शिया फ़िरक़े ने सिर्फ़ अहलेबैत (अ.स) की पैरवी की है। इस रविश की वजह क़ुरआन का ये फ़रमान है कि " मेरे हबीब आप इनसे कह दीजिये की अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबा करो' (सुराह आले इमरान : ३१) और रसूले अकरम (स.अ.व.अ) का ये क़ौल की " जो ये चाहता है की मेरी इत्तेबा करे उसे चाहिए कि हज़रत अली (अ.स.) और उनकी ज़ुर्रियत की विलायत को क़ुबूल करले।" (ग़ायतुल माराम जिल्द १ सफ़्हा ७०) इसी रविश पर चलते हुए अहले तशीअ ने हमेशा से उन अफ़राद से मुहब्बत की जिन से अहलेबैत (अ.स.) ने इज़्हारे मुहब्बत किया और उनसे बराअत और बेज़ारी की जिन्होंने अहलेबैत (अ.स) से दुश्मनी या इख़्तेलाफ़ किया या जिन से खुद अहलेबैत (अ.स.) ने दूरी इख़्तेयार करली हो, और चूंकि शियों ने सक़ीफ़ाई ख़िलाफ़त से बराअत और दुरी इख़्तेयार की है इसलिए शियों पर 'राफ्ज़ी' और 'काफ़िर' होने की तोहमत लगाई जाती है। इस मुख़्तसर मज़मून में इस दूरी और बेज़ारी की एक अहम वजह का ज़िक्र किया जा रहा है। और वजह

दुख़्तरे रसूल (स.अ.व.अ) ख़ातूने मेह्शर हज़रत फ़ातेमा ज़ेहरा (स. अ.) का उन ख़ोलफ़ा से नाराज़गी करना है। इस बात को सिर्फ़ मोतबर शीया ही नहीं बल्कि मुस्तनद अहले तसन्नुन किताबों में भी देखा जा सकता है कि हज़रत फ़ातेमा (स. अ.) शेख़ैन से शदीद नाराज़ थीं। और उनकी ये नाराज़गी मरते दम तक रही। इस ज़िमन में अहले तसन्नुन के नज़दीक़ अहम तरीन किताब से दो या तीन रिवायात बतौर मिसाल पेश कर रहे हैं।

• मोहम्मद बिन इस्माइल बुख़ारी ने अपनी किताब के बाब किताब अल फ़राएज़ के बाब क़ौले अन-नबी (स.अ.व.अ) ला नुरेसो मा तरकना सद्दक़तहु की हदीस नंबर ६३४६ में लिखा है कि:
पस फ़ातेमा (स.अ.) ने अबूबकर से बात चीत तरक कर दिया और मरते दम तक उनसे बात नहीं की।(सहीह बुखारी, जिल्द ६ सफ़्हा २४७४, ६३४६)

• इसी तरह बुख़ारी ने ख़ुम्स के अबवाब में नक़्ल किया है:
रसूले ख़ुदा (स.अ.व.अ) की बेटी हज़रत फ़ातेमा (स.अ.) अबूबकर से ग़ज़बनाक हो गईं और उनसे बात करना तक छोड़ दिया था और उनसे मरते दम तक बात नहीं की। (सहीह बुखारी, जिल्द ३ सफ़्हा ११२६, २९२६)

• अपनी किताब के एक और बाब में मुहम्मद बिन इस्माइल बुख़ारी ने जनाबे सय्यदा (स.अ.) की नाराज़गी और उसकी शिद्दत को इन अल्फ़ाज़ में रक़म किया है:

हज़रत रसूले ख़ुदा (स.अ.व.अ.) के बाद फ़ातेमा सलामुल्लाहे अलैहा छे माह तक ज़िंदा रहीं हैं और जब वो दुनिया से चली गईं तो उनके शौहर हज़रत अली (अ.स.) ने उनको रात को दफ़न किया और अबूबकर को इसकी बिलकुल भनक न लगने दी और ख़ुद ही उन पर नमाज़ पढ़ी। (सहीह बुख़ारी जिल्द ४, सफ़्हा १५४९ , हदीस ३९९८ , किताब अल मग़ाज़ी , बाब

ग़ज़वा ख़ैबर)

इन रिवायात को शेख़ बुख़ारी ने इस तरह और इन अबवाब में नक़ल किया है कि पढ़ने वाले को ये लगे कि बिन्ते रसूल (स.अ.व.अ.) की नाराज़गी सिर्फ़ माले फ़िदक और मीरासे नबी को लेकर थी। जबकि इसी बुख़ारी में मौजूद रिवायात से मालूम हो जाता है कि हज़रत फ़ातेमा ज़ेहरा सलामुल्लाहे अलैहा को दुनिया के मालो दौलत से कोई रग़बत नहीं थी. बहेर हाल इन तमाम रिवायात से ये बख़ूबी मालूम हो जाता है कि बिन्ते पैग़म्बर (स.अ.व.अ.) शेख़ैन से शदीद नाराज़ थीं और आप (अ.स.) ने अपनी नाराज़गी को तारीख़ के औराक़ में भी दर्ज करवाया है।
चुनांचे किसी भी लेहाज़ से दुख़तरे रसूल (स.अ.व.अ.) की नाराज़गी कोई मामूली या फ़रामोश करने वाली बात नहीं है बल्कि ये हक़ व बातिल के दरमियान एक नुमाया मेयार है। आपका ये वसीयत करना कि मेरे जनाज़े को रात की तारीकी में दफ़न करना ये बताता है कि आप सिर्फ़ अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों ही से नहीं बल्कि इस ज़ुल्म पर ख़ामोश रहने वाले अहले मदीना से भी नाराज़ थीं। आप (अ.स) का ये अमल ख़ामोश रह जाने की गुंजाइश को नहीं छोड़ता। दुख़तरे रसूल (स.अ.व.अ) की रूदाद सुनने वाला या तो उनका साथ दे और उनके मुख़ालिफ़ से बराअत करे या अपने आप को उन लोगों में शुमार करले जिन से सय्यदा आलम (स. अ.) नाराज़ थीं।

शियों का जुर्म सिर्फ़ इतना है कि उनहोंने हमेशा अहलेबैत (अ. स.) का साथ दिया है। हर इख़्तेलाफ़ में अहलेबैत (अ. स.) को ही हक़ पर माना और उनका साथ दिया। उनका मुख़ालिफ़ चाहे वो कोई भी हो उसको गुमराह समझा और उस से बराअत किया। मुआविया और हज़रत अली (अ. स.) की जंग में हज़रत अली (अ. स.) का साथ दिया।

मुआविया और हज़रत इमाम हसन (अ. स.)

की जंग में इमाम हसन (अ. स.) का साथ दिया, यज़ीद और इमाम हुसैन (अ. स.) की जंग में इमाम हुसैन (अ. स.) का साथ दिया। पस इसी तरह शेख़ैन और हज़रत फ़ातेमा (स. अ.) की इख़्तेलाफ़ में हज़रत फ़ातेमा (स. अ.) का साथ दिया है और देते हैं। और जिस तरह पंजतन (अ.स.) के दीगर मुख़ालेफ़ीन से इज़हारे बाराअत करते हैं, उसी तरह दूख़्तरे रसूल (स.अ.व.अ) और पंजतन पाक (अ.स.) की तमाम मुख़ालेफ़ीन से भी बराअत करते हैं।

लेहाज़ा तअज्जुब शियों पर नहीं बल्कि उन मुसलमानों पर है कि वो किस तरह पंजतन (अ.स.) से मुहब्बत का दावा करते हैं और उनके मुख़ालेफ़ीन से मुहब्बत भी करते हैं, जबकि उन्हें भी मुख़ालेफ़ीन से बराअत करना चाहिये।

ज़ियारते जनाबे फ़ातेमा (स.अ.):

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ
آلِهِ السَّلَامُ عَلَى ابْنَتِكَ الصِّدِّيقَةِ الطَّاهِرَةِ
السَّلَامُ عَلَيْكِ يَا فَاطِمَةُ بِنْتَ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى
اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ يَا سَيِّدَةَ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ أَيَّتُهَا
الْبَتُولُ الشَّهِيدَةُ الطَّاهِرَةُ لَعَنَ اللّٰهُ مَانِعَكِ
إِرْثَكِ وَ دَافِعَكِ عَنْ حَقِّكِ وَ الرَّادَّ عَلَيْكِ
قَوْلَكِ لَعَنَ اللّٰهُ أَشْيَاعَهُمْ وَ أَتْبَاعَهُمْ وَ
أَلْحَقَهُمْ بِدَرْكِ الْجَحِيمِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكِ وَ عَلَى
أَبِيكِ وَ بَعْلِكِ وَ وُلْدِكِ الْأَئِمَّةِ الرَّاشِدِينَ وَ
عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ